Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 5, Petersburg 1868

sehr; nach H. an. auch तत्त्वे *in Wahrheit, wirklich.* — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4,1,105; vgl. माङ्कव्य, मत्तु.

मङ्ख्, मङ्खति *gehen, sich bewegen* DHÂTUP. 5,19. — Vgl. मख्.

मङ्ख m. 1) = मगध 1, *b.* H. 795, Sch. — 2) N. pr. eines Mannes RÂGA-TAR. 8,997.

मङ्खक m. N. pr. eines Mannes RÂGA-TAR. 8,3435.

मङ्खना f. N. pr. eines Frauenzimmers RÂGA-TAR. 7,105.

मङ्खुण n. = मङ्खण TRIK. 2,8,49.

मङ्ग्, मङ्गते *gehen, sich bewegen* DHÂTUP. 5,40. — Vgl. मङ्क्.
— प्र s. प्रमङ्गन.

मङ्ग 1) = माङ्गनीशिरस् *Vordertheil eines Schiffes.* m. H. 878. m. n. VAIG. beim Schol. zu H. m. = पुलिन्द *Mast* oder *Ribbe eines Schiffes* HALÂJ. 3,50. Vgl. मण्ड 7. — 2) m. pl. N. eines zum grössten Theil aus Brahmanen bestehenden Landes in Çâkadvipa MBH. 6,436 (nach der Lesart der ed. Bomb.; vgl. मग und मृग (Lesart der ed. Calc.).

मङ्गल UṆÂDIS. 5,70. m. n. gaṇa अर्धर्चादि zu P. 2,4,31. SIDDH. K. 250, *b*, 8. 1) n. *a*) *Glück, Heil, Segen;* = कल्याण, शुभ u. s. w. AK. 1,1,4,3. TRIK. 3,3,404. H. 86. an. 3,676. MED. l. 119. HALÂJ. 1,122. Verz. d. Oxf. H. 24. *b*. 26. मङ्गलेप्सा ÇAT. BR. 13,8,4,16. मङ्गलार्थम् M. 5, 152. मङ्गलाय च लोकानां क्षेमाय च भवाय च BHÂG. P. 1,14,35. यथा चाहं समानीता सुदेवेनाशु बान्धवान्। तेनैव मङ्गलेनाशु सुदेवो यातु माचिरम्॥ MBH. 3, 2760. यन्मङ्गलं सहस्राक्षे सर्वदेवनमस्कृते। वृत्रनाशे समभवत्तत्ते भवतु मङ्गलम्॥ R. 2,25,30. fgg. (24 fg. GORR.). मङ्गलेच्छु Spr. 3660. कृतागसोऽपि यद्राजन्मङ्गलानि समीहसे BHÂG. P. 9,5,14. विधेहि विघ्नाधिप मङ्गलानि TRIK. 1,1,1. लक्षणं चरितं चापि गवां यच्चापि मङ्गलम् MBH. 4, 70. श्रीर्मङ्गलात्प्रभवति Spr. 5087. (नामधेयम्) जगत्प्रथममङ्गलम् RAGH. 10,68. लोकमङ्गलम्। यत्कृतः कृष्णसंप्रश्नः BHÂG. P. 1,2,5. मङ्गलानां च मङ्गलम् (पञ्चरात्रम्) PAÑKAR. 2,1,9. कवचं च ददौ तस्मै जगन्मङ्गलमङ्गलम् 1,4,23. 81. तज्जन्मचरितं नृणां सर्वमङ्गलमङ्गलम् Verz. d. Oxf. H. 25, *b*, 12. मनुर्विख्यातमङ्गलः BHÂG. P. 3,21,25. मङ्गल्यं मङ्गलार्हं च मङ्गलं मङ्गलालयम् (विष्णुम्) PAÑKAR. 1 1,6. 2,1,8. Verz. d. Oxf. H. 20, *a*, 4 v. u. मङ्गल्यं मङ्गलं विष्णुं वरेण्यमनघं शुचिम् MBH. 1, 24. अ° adj. *unheilvoll, Unheil bringend:* यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेष्वमङ्गलम् Spr. 4807. RAGH. 12, 43. (कृकलासः) दृष्टोऽप्यमङ्गलः ÇAṂK. zu BṚH. ÂR. UP. S. 299. पौलोमीमङ्गला भव *habe das Glück der* Paulomî ÇÂK. 187, v. l. क्षेरद्भुतवीर्यस्य कथा लोकसुमङ्गलाः BHÂG. P. 2,8,2. दिष्ट्या (स्वस्ति) स्यान्मङ्गलादिषु HALÂJ. 5,86. 106. — *b*) *Alles was zum Glück, zu einem glücklichen Ausgang einer Sache verhilft, ein gutes Omen für das Gelingen einer Sache ist: Glückwunsch, ein glückbringendes Gebet, ein solcher Anzug, Schmuck* oder *anderer Gegenstand; eine bei einem wichtigen Ereigniss stattfindende Feier, eine feierliche Cerimonie;* = सर्वार्थरक्षण MED. मघासु हन्यन्ते गावः फल्गुनीषु व्युह्यत (AV. 14, 1, 13) इति विज्ञायते मङ्गलं च KAUÇ. 75 in Ind. St. 5,378. (नृपतिः) प्राविशन्नगरीं श्रीमानर्चितः सर्वमङ्गलैः R. 1,18,18. पुरोधसा वसिष्ठेन मङ्गलैरभिमन्त्रितः 24,2. वास्तुसंशमनीयानि मङ्गलानि प्रवर्तयन् 2,56,27. सूतमागधाः। तुष्टुवुर्वाग्विशेषज्ञाः स्तवैर्मङ्गलसंहितैः (मङ्गलसंस्तवैः ed. Bomb.) 81,1. मङ्गलाशीःप्रणामैः VARÂH. BṚH. S. 43,59. आशीर्मङ्गलैः RÂGA-TAR. 5,482. आश्वास्य तामाशीर्वादैः समङ्गलैः N. 18,19. मङ्गलैः स्तुतिभिश्चापि विजयप्रतिसंहितैः। चारणैः स्तूयमानौ तौ जग्मतुः परमया मुदा॥ MBH. 1, 7655. मङ्गलाद्यप्रयोग 2, 243. सूतमागधवन्दिभ्यो बोधितो स्तुतिमङ्गलैः HARIV. 3964. Spr. 4378. इदं विविक्तं जप्तव्यं पवित्रं मङ्गलं परम् BHÂG. P. 4,24,31. गायति मङ्गलानि Schol. zu GAIM. 1,31. प्रगेतनानि मङ्गलान्यनुष्ठाय DAÇAK. in BENF. Chr. 188,22. प्रमुदितपिककण्ठप्रोच्छलन्मङ्गलश्रीः (वसन्तः) DHÛRTAS. in LA. 69, 9. प्रवासं यदि मे याति भर्ता कार्येण केनचित्। मङ्गलैर्बहुभिर्युक्ता भवामि नियता तदा॥ *mit Amuleten* u. s. w. MBH. 13, 5873. बहवः संप्रदृश्यन्ते तुल्यनक्षत्रमङ्गलाः। महत्तु फलवैषम्यं दृश्यते कर्मसंधिषु॥ 3, 13862. °कृत्स्नो जनः (= मन्त्रादिवित्पुरोहितादिः Schol.) 2, 235. पौरैर्मङ्गलपाणिभिः R. 1,77,7. मङ्गलैरभिषिञ्चस्व (= अभिषेकसाधनैः Schol.) 2, 23, 30. तथैव पुण्यतीर्थेभ्यो मृदापो मङ्गलानि च R. GORR. 2,12,8. 6, 97, 20. VARÂH. BṚH. S. 43,12. 48,42. SUÇR. 1, 21, 19. 30, 5. 70, 21. उदकपूर्णघटादिमङ्गलोपेतः Verz. d. Oxf. H. 268, *a*, 25. संभृतानि विजयप्रयाणमङ्गलानि PRAB. 78, 7. मङ्गलानि क्रमेच्च सा Ind. St. 5,333,1. मम युद्धायोत्थितस्य सर्वं मङ्गलादि सज्जं क्रियताम्। इत्युक्ते कृतमङ्गलविधिः u. s. w. PAÑKAT. ed. orn. 37,11. यत्रैव प्रभवेद्वत्स तन्नामगुणकीर्तनम्। तत्र सर्वाणि तीर्थानि पुण्यानि मङ्गलानि च॥ PAÑKAR. 1,10,69. विप्रा मङ्गलपूजिताः (मङ्गल = दक्षिणा Schol.) BHÂG. P. 5,4,7. मङ्गलालंकृता MÂLAV. 13. सितांशुका मङ्गलमात्रभूषणा VIKR. 33. यमेव दिवसं राजा चक्रे गोदानमङ्गलम् (so ist zu lesen) *Feier* R. GORR. 1,73,1. निरानन्दा निरुत्साहा निर्वयह्ग्रमङ्गला (पुरी) 2,59,17. मङ्गलं चापरं नास्ति यदस्माद् (पुष्यस्नानात्) अतिरिच्यते VARÂH. BṚH. S. 48,84. तूर्यस्वने मूर्छति मङ्गलार्थे RAGH. 6,9. जन्मदिनेषु पुण्यदिनेषु चोत्सवोत्तरो मङ्गलविधिः DAÇAK. in BENF. Chr. 180,5. विवाह° KATHÂS. 32,3. SOM. NALA 42. उद्वाह° KATHÂS. 44,114. संध्यामङ्गलदीपिका *eine zur Abendfeier dienende Lampe* VIKR. 43. उपस्पृश्य जलं शुचि। चकार माता रामस्य मङ्गलानि so v. a. *sprach den Segen über ihn* R. 2,25,1. स्वैरेवावयवैः प्रियस्य विशतस्तन्व्या कृतं मङ्गलम् *bereitete einen feierlichen Empfang* Spr. 1168. कृतमङ्गल adj. f. आ *der ein Gebet gesprochen hat, über den ein Gebet gesprochen worden ist, zu einem bevorstehenden Unternehmen mit glückverheissenden Gegenständen angethan* ÇÂÑKH. GṚHJ. 1, 12. SUÇR. 2,163,6. KATHÂS. 42,83. MÂRK. P. 21, 62. PRAB. 78, 17. कृतबलिमङ्गलस्वस्तिवाचन SUÇR. 1, 13, 6. अष्टरचितमङ्गल KATHÂS. 43, 235. die acht *glückverheissenden Dinge* an den Füssen Buddha's Lot. de la b. l. 647. WILSON, Sel. Works II, 13. — *c*) *hergebrachte Sitte:* यद्वामङ्गलं वा सर्वेषाम् PÂR. GṚHJ. 2, 1 in Z. d. d. m. G. 7, 532. यद्दिष्टं मङ्गलं कुले M. 2, 34. — *d*) *ein gutes Werk:* अनसूया दया क्षान्तिरनायासं च (lies अनायासश्च *Unermüdlichkeit;* vgl. MBH. 5, 1466. fg.) मङ्गलम्। अकार्पण्यं तथा शौचमस्पृहा च sind die acht आत्मगुणाः Verz. d. Oxf. H. 30, *b*, 13. अहो आचरितं किं मे मङ्गलम् BHÂG. P. 4,22,7. — 2) adj. = मङ्गल्य *heilbringend:* मङ्गलं मरुतां जन्म BHÂG. P. 6,18,77. मङ्गलानां und अमङ्गलानां कर्मणाम् 4,6,45. मङ्गल voc. (रुद्र) ebend. तं त्वां मङ्गलं मन्ये PAÑKAR. 2, 2, 27. तद्दिनं सफलं मन्ये सर्वमङ्गलम् 1, 10, 71. Statt मङ्गलान्यक्षिणः MBH. 7, 2932 liest die ed. Bomb. richtiger मङ्गल्यान्य°. — 3) m. *a*) N. des Agni beim Sîmanta GṚHJASAÑGR. 1,3. — *b*) *der Planet Mars* TRIK. 1,1,92. 3,3,404. H. 116. H. an. MED. Verz. d. Oxf. H. 24, *b*, 28. °शान्ति 86, *b*, 42. Verz. d. B. H. No. 1268. °पूजा 1270. °व्रत ebend. — *c*) N. pr. eines Fürsten aus Manu's Geschlecht Verz. d. Oxf. H. 24, *b*, 29. eines Buddha LALIT. ed. Calc. 5, 15. eines Dichters Verz. d. Tüb. H. 13, 6.

Institute of Indology & Tamil Studies, Cologne University, Germany 9.2.2007